प्राक्कथन

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन और विषय चयन -

उपन्यास विधा शुरू से मेरे रुचि का विषय रहा है। एम.ए.के उपरांत यह रुचि बढ़ती गयी। जब अनुसंधान कार्य हेतु मैंने आदरणीय गुरुवर्य स्वर्गीय अरविंद पोतदार जी से चर्चा की। तब मुझे उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर कालीन उपन्यासकार देवेश ठाकुर, मृदुला गर्ग, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, हरिशंकर परसाई आदि उपन्यासकारों के नाम बताए।

मैंने कमलेश्वर की रचना का एम.फिल. के अनुसंधान हेतु चयन किया। 'लौटे हुए मुसाफिर' और 'रेगिस्तान' ऐसी रचना है जिन्होंने मुझे न केवल प्रभावित किया अपितु बैचेन भी किया। फरवरी, 2000 में 'कितने पाकिस्तान' नामक कमलेश्वर का एक नया उपन्यास प्रकाशित हो गया। इस उपन्यास ने मुझे पूरी तरह झकझोरकर चिंतन के लिए विवश किया।

मेरे मार्गदर्शक आदरणीय गुरुवर्य डॉ.पांडुरंग पाटील जी के सन्मुख 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास पर अनुसंधान करने की इच्छा प्रकट की तथा उनकी अनुमति से ही **'कमलेश्वर के कितने पाकिस्तान उपन्यास का अनुशीलन'** इस विषय को निश्चित किया।

शोध विषय और उद्देश्य -

कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य के सशक्त रचनाकार हैं। हिंदी के स्वातंत्र्योत्तर कालखंड़ में कहानी एवं उपन्यास के विकास में जिन प्रमुख रचनाकारों का योगदान रहा हैं उनमें कमलेश्वर भी एक हैं। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का केंद्रबिंदू मानवता है।

इस शोध प्रबंध में कमलेश्वर के कितने पाकिस्तान उपन्यास का अनुशीलन करना ही इस अनुसंधान का मुख्य विषय और उद्देश रहा है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न निर्माण हुए थे -

1. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की कथावस्तु क्या है?
2. उपन्यास का शीर्षक 'कितने पाकिस्तान' क्यों रखा है?
3. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में ऐतिहासिक घटना एवं ऐतिहासिक पात्रों का चित्रण क्यों किया है?
4. उपन्यास में किन समस्याओं पर प्रकाश डाला है?
5. 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का उद्देश्य क्या है?
6. 'बाबरी मस्जिद' का ऐतिहासिक सत्य क्या है?
7. पाँच हजार साल का 'अखंड़ता का इतिहास' ब्रिटिशों के कालखंड क्यों टूट गया?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए है। अध्ययन एवं शोध की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया है -

<u>प्रथम अध्याय</u> - **''कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''** इसके अंतर्गत कमलेश्वर जी के जीवन का सामान्य परिचय दिया है। यह तीन खंड़ों में विभाजित है। जिनमें कमलेश्वर की जीवन रेखा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू तथा उनके कृतित्व का विवेचन किया है। कमलेश्वर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालने के बाद अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> - **'' 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का तात्त्विक विवेचन''** इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों, कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल वातावरण, शैली और उद्देश्य के सहारे 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की समीक्षा की है। और अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किये हैं।

<u>तृतीय अध्याय</u> - **'' 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में ऐतिहासिकता''** इस अध्याय के अंतर्गत ऐतिहासिकता का अर्थ एवं परिभाषा, मुगलसम्राट बाबर का कालखंड़, उस पर लगाए गए आरोप, आरोपों का खंड़न, सत्रहवी सदी का उत्तराधिकारयुध्द, औरंगजेब की कुटनीति,दारा की हत्या आदि महत्त्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ भारत में विदेशी कंपनीयों

का भारत आगमन, प्लासी का युद्ध, बक्सर का युद्ध, सन् 1857 ई.की आझादी की जंग, मुस्लिम लीग की स्थापना, पाकिस्तान का प्रस्ताव, एटली की घोषणा, भारत विभाजन और आझादी, भारत विभाजन और गांधीजी, मोहम्मद अली जिन्ना आदि पर प्रकाश डाला है। और अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय - '' **'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में सांप्रदायिकता**'' इसके अंतर्गत कमलेश्वर ने सांप्रदायिकता का चित्रण किया है। आर्यों का आगमन उनके द्वारा प्रस्थापित वर्णव्यवस्था बाबर के कालखंड़ में चित्रित सांप्रदायिकता, धर्मांध औरंगजेब और उत्तराधिकार युद्ध, ब्रिटिशों की नीति, डॉ.इकबाल का स्वार्थीरुप, भारत विभाजन और सांप्रदायिक दंगो आदि महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालकर अंत में निष्कर्ष दिया है।

पंचम अध्याय - '' **'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ** '' इस अध्याय के अंतर्गत समस्या का अर्थ एवं स्वरूप प्रकार आदि को विवेचित किया है। सामाजिक समस्या के 'अंतर्गत' व्यसनाधिनता, नारी शोषण, मकान समस्या, अंतर्जातीय विवाह आदि महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं राजनीतिक समस्याओं के अंतर्गत आतंकवाद, अलगाववाद, विभाजन, उत्तराधिकार गृहयुद्ध आदि समस्याओं को तो आर्थिक समस्या के अंतर्गत ब्रिटिश शासन पूर्व भारत आर्थिक स्थिति, धन की अतिरिक्त लालसा, जमीन की पैदावार आर्थिक शोषण, गरीबी आदि समस्याओं को तो धार्मिक समस्या में वर्णवाद, ब्राहमणवाद, ईसाई धर्म का प्रसार, धार्मिक कठोरता और धर्मांतरण आदि महत्त्वपूर्ण समस्याओं को उद्घाटित किया है। साथ ही साहित्यिक और वैज्ञानिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में उपसंहार के रूप में इस लघुशोध में पूर्व विवेचित अध्यायों के तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं। फिर आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरूजनों, परिवार के सदस्यों तथा मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.पांडुरंग पाटोल जी के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। उन्होंने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी समय-समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहित किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है।

साथ ही डॉ.सौ.एम.एस.जाधव, स्व.प्रा.अरविंद पोतदार तथा डॉ.सुनील बनसोडे, डॉ.अशोक बाचुळकर, डॉ.गिरिश काशिद आदि ने भी मुझे इस शोधकार्य में मौलिक मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मेरे आदरणीय चाचाजी श्री.नारायण मोहिते और चाची शोभाताई दोनों अनपढ़ होते हुए भी मुझे हमेशा आगे पढ़ने की प्रेरणा देते रहे। साथ ही माता-पिता समान सौ.सविता देसाई और सुंदरराव देसाई के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है, अतः मैं उनके ऋण में सदैव रहूँगा।

मेरे परिवार के सदस्य मेरे दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची तथा परिवार के सभी छोटे सदस्यों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही मेरे मित्र सुजय देसाई, विकास शेटे जिन्होंने मुझे प्रस्तुत कार्य में सदैव सक्रिय सहयोग एवं प्रोत्साहन दिया इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, राजा भगवंतराव महाविद्यालय, औंध, विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर, समता हायस्कूल,

कोल्हापुर आदि ग्रंथालयों के ग्रंथपालों तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का संगणकीय टंकन कोल्हापुर के श्री.मिलींद भोसले ने बड़ी तत्परता के साथ एवं उत्तम रीति से पूरा किया, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

इस शोध कार्य को संपन्न बनाने में मेरे सभी सहृदय मित्रों ने मेरी सहायता की है। अतः मैं उन सबका पुनश्च आभार मानकर विनम्रता से विद्वानों के सामने इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर।
तिथि -

शोध छात्र
श्री सुभाष शिवाजी मोहिते

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय -	कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1 से 19
द्वितीय अध्याय -	'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का तात्त्विक विवेचन	20 से 67
तृतीय अध्याय -	'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में ऐतिहासिकता	68 से 120
चतुर्थ अध्याय -	'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में सांप्रदायिकता	121 से 161
पंचम अध्याय -	'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ	162 से 222
	उपसंहार	223 से 238
	संदर्भ ग्रंथ सूची	239 से 243

❋ प्रथम अध्याय ❋

कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व